युवाओं के हाथ में तमंचा नहीं कलम होनी चाहिये: सिद्धार्थ नगर

website: www.pawanprawah.com
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2018-2020
सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह
लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
पवन प्रवाह

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

कुंभ-पर्व प्रयागराज में मेला आयोजन

हम पूर्व अंक-4 मे विश्व के सबसे बड़े कुम्भ महोत्सव के बारे मे वैज्ञानिक कारणो को जानने हेतु एस.एम.एस. द्वारा गठित समूह व उसके अध्ययन के निष्कर्ष तथा कुम्भ महोत्सव के धार्मिक पक्ष के विषय मे जानकारी प्राप्त की। इस अंक मे हम प्रयागराज तीर्थ स्थल के धार्मिक पहलू के साथ साथ मेला आयोजन को जानने का प्रयास करेंगे।

भाग-05

गतांक से आगे

प्रयागराज में कुम्भ मेला आयोजन मे यातायात व्यवस्था

अल्प समय के लिए यह कुम्भ नगर यातायात के सम्पूर्ण साधनों से युक्त हो जाता है। इस कुम्भ नगर के लिए एक माह तक देश के हर क्षेत्र से स्पेशल ट्रेनें चलती हैं फिर भी मुख्य स्नानों के दिन यातायात की व्यवस्था कम पड़ जाती है। कुम्भ के मुख्य स्नान पर्वों पर दिल्ली से इलाहाबाद के बीच विमान सेवा की व्यवस्था की गयी थी। इसके साथ ही दैनिक रूप से संचालित दिल्ली-लखनऊ-पटना-कलकत्ता वायुसेवा को एक माह के लिए कानपुर से जोड़ दिया गया था जिससे देश-विदेश के पर्यटक एवं तीर्थयात्री सुविधा पूर्वक आ सकें। कुम्भ नगर के लिए उत्तर रेलवे ने बीस स्पेशल ट्रेने चलायी थीं।

कुम्भ मेले के समय प्रयाग घाट एवं दारागंज रेलवे स्टेशन का महत्त्व अत्यधिक बढ़ जाता है। तीर्थ यात्रियों के लिए प्रदेश के सभी क्षेत्रों से अतिरिक्त सैकड़ों बसों की व्यवस्था उत्तर प्रदेश राज्य परिवहन निगम ने किया था। इसके साथ ही प्राइवेट साधनों का प्रयोग भी अत्यधिक संख्या में होता है। वायु सेवा, सड़क एवं रेल सेवा के साथ-साथ नौ परिवहन से भी आस-पास के क्षेत्रों से जुड़ जाता है। परिवहन निगम ने 3300 अतिरिक्त बसें चलायी थी। प्रत्येक बस पर कुम्भ का 'लोगो' लगा रहता था ताकि यात्रियों को कुम्भ की विशेष बसों को ढूढ़ने असुविधा न हो।

कुम्भ नगर की आन्तरिक संरचना एवं व्यवस्थायें

1396 हेक्टेयर भूमि पर विस्तृत कुम्भ नगर की आन्तरिक संचना एवं व्यवस्थायें नियोजित रूप में तैयार की जाती हैं। कुम्भ नगर की आन्तरिक संरचना को विकसित करने के लिए इसे 11 सेक्टरों में विभाजित किया गया था। कुम्भ नगर की आन्तरिक सड़कें 60 मीटर से 80 मीटर चौड़ी बनायी गयी थीं जो एक दूसरे को लगभग समकोण पर काटती थीं। आन्तरिक क्षेत्र की प्रमुख सड़कों का नाम जवाहर लाल नेहरू सड़क, त्रिवेणी रोड, काली सड़क, तुलसी मार्ग, संगम मार्ग, मुक्ति मार्ग, शंकराचार्य मार्ग, मोरी मार्ग इत्यादि रखा गया था। प्रत्येक सेक्टर की अपनी विशिष्टता होती है। सम्पूर्ण कुम्भ नगर विद्युत, पेयजल, शौचालयों व दूरसंचार के साधनों से युक्त होता है। कुम्भ नगर की कुछ विशिष्ट व्यवस्था एवं **आयोजनाओं का वर्णन निम्न है-**

कुम्भ नगर के अतिरिक्त इलाहाबाद शहर में यात्रियों को ठहरने के लिए रेलवे एवं बस स्टेशनों के निकट 100 केन्द्र बनाये गये थे जिससे तीर्थयात्री सुविधा पूर्वक पहुँच सकें।

कुम्भ नगर के लिए कड़े सुरक्षा प्रबन्ध किये गये थे। इसके लिए पूरे कुम्भ नगर को 5 जोन, 15 सेक्टर, 28 थाने एवं 35 चौकियों में विभाजित किया गया था। पुलिस प्रबन्ध हेतु 5 पुलिस लाइन तथा 7 बैरियर बनाये गये थे। नगर की व्यवस्था हेतु 10 अपर पुलिस अधीक्षक, 46 पुलिस उपाधीक्षक, 74 निरीक्षक, 728 उप निरीक्षक, 860 हेड कान्सटेबिल, 7276 कान्सटेबल तथा 1108 कर्मचारी लगाये गये थे। 150 घुड़सवार पुलिस भी तैनात थी। कुम्भ नगर को 7 संचार ग्रिडों में बांटकर 300 संचार केन्द्रों से जोड़ा गया था।

कुम्भ नगर में आग पर नियंत्रण के लिए 25 अग्निशमन केन्द्र खोले गये थे। इसके अतिरिक्त 45 कम्पनी पी0ए0सी0 भी तैनात की गयी थी।

पूरे कुम्भ नगर में 5 खोया पाया केन्द्र खोला गया था जो कम्प्यूटर के माध्यम से एक दूसरे से जुड़े हुए थे।

कुम्भ नगर में अतिरिक्त सुरक्षा व्यवस्था के लिए 15 इन्फ्रारेड नाइट विजन कैमरे लगाये गये थे जिससे घोर अंधेरे में भी गतिविधियों पर नजर रखी जा सके। पूरे मेला क्षेत्र में 150 टावर बनाये गये थे ताकि इन पर तैनात सुरक्षा कर्मी दूरबीन से सम्पूर्ण क्षेत्र को सूक्ष्मता से देख सकें। इन्फ्रारेड नाइट विजन कैमरे इतने सशक्त होते हैं जिससे ढाई किलोमीटर दूर की गतिविधियों को आसानी से पकड़ा जा सकता है।

कुम्भ नगर क्षेत्र के प्रत्येक सेक्टर में आयुर्वेद, होम्योपैथ एवं एलोपैथ के चिकित्सालय बनाये गये थे। इसके अतिरिक्त बहुत से चिकित्सक व्यक्तिगत रूप में निःशुल्क चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराते थे। 2001 के कुम्भ नगर की स्वास्थ्य की दृष्टि से सबसे बड़ी विशिष्टता यह थी कि 'टेली मेडिसिन' के द्वारा स्नान हेतु आये श्रद्धालुओं के स्वास्थ्य की जांच की जा सके। इस टेलीमेडिसिन की जिम्मेदारी लखनऊ के संजय गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान के डॉक्टरों ने उठायी थी। इसके लिए कुम्भ नगर को आई0एस0डी0एन0 लाइन और कम्प्यूटरीकृत उपकरणों में बने मुख्य चिकित्सालय की मदद से जोड़ा गया था।

कुम्भ नगर में प्रचुर मात्रा में खाद्यान्न, चीनी, मिट्टी के तेल, पेट्रोलियम पदार्थ, कुकिंग गैस तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति के लिए व्यवस्था की गयी थी। इसके लिए विभिन्न सेक्टरों में 135 उचित दर की दुकानें खोली गयी थीं। इसके लिए अस्थाई राशनकार्ड भी बनाये गये थे। जलाऊ लकड़ी ईंधन के लिए 11 लकड़ी डिपो स्थापित किए गये थे। कुम्भ नगर में 22 सब्जी के थोक विक्रेता नियुक्त किए गये थे और साग सब्जी की फुटकर बिक्री हेतु 40 दुकानें आवंटित कर दी गई थी। नगर में कुकिंग गैस की आपूर्ति हेतु 6 गैसे एजेन्सियां खोली गयी थीं।

लोक निर्माण विभाग ने बालू तथा रेत में 78 किमी0 लम्बी सड़क चेकर्ड प्लेटों को बिछाकर बनायी थी जिन पर 10 टन भार वाले ट्रक भी आसानी से चल सकें। इसी प्रकार विद्युत विभाग द्वारा 640 किमी0 लम्बे विद्युत टावरों का जाल मेले में बिछाया गया था। इन खम्भों पर 2500 किमी0 लम्बे विभिन्न क्षमता वाले ओवरहेड तार लगाये गये थे। बिजली विभाग ने लगभग 70 हजार कैम्प कनेक्शन, इतने ही प्रशासनिक कनेक्शनों के अलावा 18000 रंग बिरंगी स्ट्रीट लाइटें लगायी थीं। रात में इसकी छटा अत्यन्त निराली लगती थी।

पेयजल विभाग ने एक करोड़ लीटर पीने के पानी की आवश्यकता को देखते हुए 28 नलकूप लगवाये थे। इनमें से 20 स्थायी रूप से बन गये हैं। जलापूर्ति के लिए 200 किमी0 लम्बी पाइप लाइनों का जाल बिछाया गया था।

नगर में स्वास्थ्य एवं सफाई की व्यवस्था उत्तम थी। 8 हजार सफाई कर्मचारी दिन-रात लगे रहते थे। सफाई कार्य उन क्षेत्रों में कठिन था जहां 5 से 8 लाख कल्पवासी महीने भर प्रवास कर रहे थे।

डाक-तार एवं संचार विभाग ने भी अपनी व्यवस्थाओं का जाल बिछा रखा था।

कुम्भ नगर को कवर करने के लिए देश-विदेश के लगभग 600 पत्रकार, टी0वी0 कैमरामैन, प्राइवेट चैनल और दूरदर्शन आदि की टीमें आकर्षण का केन्द्र थीं। मीडिया के रुकने, ठहरने और उन्हें पास आदि मुहैया कराने के लिए प्रदेश के सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग ने अच्छी व्यवस्था की थी।

कुम्भ नगर में तीर्थयात्रियों की सुरक्षा में 'जल पुलिस' का योगदान भी महत्त्वपूर्ण है। नदी में हर दो मीटर की दूरी पर अपनी नावों में खड़े जल पुलिस के तैराक बराबर संगम में स्नान करने वालों पर नजर रखते थे। छः सौ से अधिक तैराकों, नावों व अन्य बचाव सम्बन्धी उपकरणों से लैस जल पुलिस संगम में तैनात थी।

गंगा जल को प्रदूषण से मुक्त रखने हेतु गंगा में गिरने वाले नालों को रोकने का प्रयास किया गया था। इसके लिए मोरी नाले को स्थायी रूप से टैप करके यमुना पार नैनी की ओर मोड़ दिया गया था। दूसरा नाला सलोरी के पास गंगा में गिरता था। इसके पानी को रोकने के लिए एक बाँध बनाकर अस्थायी झील बना दी गयी थी। डेढ़ महीने में इस कृत्रिम झील में तीन करोड़ लीटर से अधिक गन्दा जल एकत्रित हो गया था।

कुम्भ नगर की जानकारी प्रदान करने के लिए प्रशासन द्वारा कुम्भ बेबसाइट प्रारम्भ किया गया था। इससे बेबसाइट http/www.kumbhaldupgovutindia.org पर कुम्भ की सारी जानकारी प्राप्त हो जाती थी। दुनिया में आये संचार क्रान्ति का प्रभाव कुम्भ नगर में स्पष्ट रूप से दिखाई दिया (कुम्भ मेला प्रशासन-2013 एवं समाचार पत्रों से प्राप्त सूचना पर आधारित)।

इस प्रकार कुम्भ नगर अल्पकालिक समय के लिए भारत का सबसे महत्त्वपूर्ण नगर बन जाता है जो धार्मिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं सुसंस्कृत आचार-व्यवहार के केन्द्र के रूप में विकसित होता है। इस कुम्भ नगर की व्यवस्था को देखकर यह कहा जा सकता है कि ''संगम तीरे लघु भारत का दर्शन होता है।''

(शेष अगले अंक में)

कुम्भ नगर की जानकारी प्रदान करने के लिए प्रशासन द्वारा कुम्भ बेबसाइट प्रारम्भ किया गया था। इससे बेबसाइट http/www.kumbhaldup-govutindia.org पर कुम्भ की सारी जानकारी प्राप्त हो जाती थी। दुनिया में आये संचार क्रान्ति का प्रभाव कुम्भ नगर में स्पष्ट रूप से दिखाई दिया (कुम्भ मेला प्रशासन-2013 एवं समाचार पत्रों से प्राप्त सूचना पर आधारित)। इस प्रकार कुम्भ नगर अल्पकालिक समय के लिए भारत का सबसे महत्त्वपूर्ण नगर बन जाता है जो धार्मिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं सुसंस्कृत आचार-व्यवहार के केन्द्र के रूप में विकसित होता है। इस कुम्भ नगर की व्यवस्था को देखकर यह कहा जा सकता है कि ''संगम तीरे लघु भारत का दर्शन होता है।''